ISSN: 2455-8729
International Educational Journal
CHETANA

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों की सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृति का अध्ययन

* डॉ. वीना बाना, व्याख्याता,
ग्रामोत्थान विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय, संगरिया–335 063
**श्रीमती कुसुमलता,
शोध अध्येता, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्राप्त किया – 12 फरवरी 2017, संशोधन किया – 20 फरवरी, स्वीकृत किया – 27 फरवरी 2017

सार–संक्षेप

मुख्य रेखांकित पद– *सतत् और व्यापक मूल्यांकन, शिक्षक, माध्यमिक विद्यालय*

International Educational Journal is licensed Based on a work at www.echetana.com

शिक्षा समग्र जीवन के उन्नयन की प्रक्रिया मे महत्वपूर्ण घटक है। व्यावसायिक व हस्तकला की शिक्षा के कारण छात्र केवल नौकरी पर ही निर्भर नहीं रहता। वह अपना स्वतंत्र रूप से व्यवसाय कर सकता है इससे बेकारी की समस्या दूर होगी। तकनीकी विषयों का भी सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत महत्व है। तकनीकी विकास के कारण संस्कृति का क्षेत्र भी विस्तृत हो गया है। नवीन संस्कृति का ज्ञान हमें उदार शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा दोनो से प्राप्त हो सकता है समाज को केवल लिपिक वर्ग की ही आवश्यकता नहीं है, समाज को विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। उनकी पूर्ति के लिए बहुप्रयोजनीकृत पाठ्यक्रम आवश्यक है। शिक्षक द्वारा कक्षा में शिक्षण करना तथा उसकी उपलब्धि या सम्प्राप्ति का ज्ञान करना ही शिक्षण के लिए आवश्यक है। मूल्यांकन के द्वारा छात्र अधिकाधिक अध्ययन करने हेतु अभिप्रेरित होते हैं। इसके द्वारा आत्म –प्रकाशन का अवसर सुलभ होता है। अध्ययन की कमियों के संबंध मे जानकारी प्राप्त होती है। उन्हे अपने व्यवहार परिवर्तन व निहित क्षमताओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। शिक्षण–व्यूह रचना में सुधार व शिक्षण द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधियों की उपयुक्तता के लिए ज्ञान प्राप्त होता है। सतत् और व्यापक मूल्यांकन (सी. सी.ई) का आशय विद्यार्थियों के विद्यालय आधारित मूल्यांकन की उस प्रणाली के बारे में है जिसमें विद्यार्थियों के सभी पहलुओं की ओर ध्यान दिया जाता है।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव समाज के सर्वांगीण विकास में प्राण फूंकती है और जीवन के क्रम को समुन्नत एवं सर्व हिताय बनाती है। शिक्षा समाज को एक ऐसा व्यक्ति उपलब्ध कराती है जिसके पास सूचना, कल्पना शक्ति ज्ञान और नैतिकता होती है। अन्य शब्दों मे कहे तो एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व वाला व्यक्ति ही शिक्षित व्यक्ति है। कोठारी आयोग ने शिक्षा को उत्पादकता से जोडा है तो मुदालियर आयोग ने

व्यावसायिक क्षमता के विकास की बात की है। सतत् और व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य संज्ञानात्मक मनोप्रेरक और प्रभावशाली कौशलों का विकास करने में सहायता देना व कंठस्थ करने के साथ चिंतन की प्रक्रिया पर बल देना हैं। सतत् और व्यापक मूल्यांकन का 'व्यापक' संघटक बच्चे के व्यक्तित्व के विकास के निर्धारण का ध्यान रखता है। इसमें विद्यार्थियों के विकास के शैक्षिक और इसके अलावा सह–शैक्षिक पहलुओं का निर्धारण शामिल है। मूल्यांकन के पश्चात आवश्यक पृष्ठ पोषण प्रदान कर उसके सर्वागींण विकास को गति प्रदान की जाती है। यह निर्धारण अथवा मूल्यांकन एक उपयोगी, वांछनीय ओर एक समर्थकारी प्रक्रिया है। इसे पूरा करने के लिए हमारे लिए निम्नलिखित प्रचलों को ध्यान मे रखना जरूरी है–

- विद्यार्थी का मूल्यांकन करना।
- विद्यार्थी का ज्ञान और पाठ्क्रम के विषयों और अन्य विषयों के बारे मे सूचना एकत्र करने के लिए विविध प्रकार के तरीकों का उपयोग करना।
- सूचना निरंतर एकत्र करते रहना और उसे अभिलेखबद्ध करना।
- प्रत्येक विद्यार्थी के प्रत्युतर देने और सीखने के तरीके और उसमें लगने वाले समय को महत्व देना।
- निरंतर आधार पर रिपोर्ट देना और प्रत्येक विद्यार्थी की अनुक्रिया के बारे में संवेदन शील होना।

इसलिए शोधार्थी ने अपने शोध का विषय, ''केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों की सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृति का अध्ययन'' चयनित किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों की सत्त और व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र –छात्राओं की सतत् और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्य सहगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
3. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र–छात्राओं की सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्यगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र –छात्राओं की सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र –छात्राओं की सतत् और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्य सहगामी घटक के प्रति अभिवृत्तिमे सार्थक अन्तर नही है।

3. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र –छात्राओं की सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्यगामी घटक के प्रति अभिवृत्तिमे सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन की परिसीमाएँ :– यह अनुसंधान कार्य केवल राजस्थान राज्य के झुन्झुनू जिले मे स्थित केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को सम्मिलित किया गया।

न्यादर्श :– केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के कक्षा 9 के 50 छात्र व 50 छात्राओं को सम्मिलित किया गया।

विधि – सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

उपकरण – स्वनिर्मित सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन स्तर मापनी का उपयोग किया गया।

शोधकर्त्री द्वारा प्रश्नावली का निर्माण करने के पश्चात् इसे उतर दाताओं को प्रदान किया गया। इसमें 27 प्रश्न नकारात्मक है और 43 प्रश्न सकारात्मक है, जिनका अंकन 5, 4, 3, 2, 1 के आधार पर किया गया। विश्वसनीयता पर परीक्षण–पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता विधि (Test- Reliability Method) का उपयोग किया गया।

सांख्यिकी :–मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण का उपयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या:–

तालिका संख्या 1

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रोंव छात्राओं की सतत और व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति

क्रम संख्या	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी– मान	सार्थकता (.05 स्तर पर)
1.	छांत्र	50	45.85	5.12	1.68	सार्थक नहीं
2.	छात्राए	50	41.60	4.36		

व्याख्या– उपरोक्त सारणी संख्या 1 से ज्ञात होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों व छात्राओं की संपूर्ण सतत और व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन क्रम ा: 45.85 व 5.12 एवं 41.60 व 4.36 है। टी–मान (ज. टंसनम) 1.68 है। यह .05 व .01 स्तर पर सार्थक अन्तरनहीं है।

तालिका संख्या 2

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रोंव छात्राओं की सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्य सहगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति

क्रम संख्या	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता (.05 स्तर पर)
1.	छांत्र	50	45.39	5.24	2.91	सार्थक
2.	छात्राए	50	42.60	4.29		

व्याख्या– उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों व छात्राओं की सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्य सहगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन क्रम ा: 45.39 व 42.60 एवं 5.24 व 4.29 है। टी–मान (ज. टंसनम) 2.91 प्राप्त हुआ है जो .05 व .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या 3

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड छात्रों की सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्य गामी घटक के प्रति अभिवृत्ति में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

क्रम संख्या	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता (.05 स्तर पर)
1.	छांत्र	50	46.27	5.32	2.02	सार्थक
2.	छात्राए	50	44.31	4.29		

व्याख्या– उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा के छात्रों वछात्राओं की सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्य गामी घटक के प्रतिअभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 46.27 व 44.31 एवं 5.32 व 4.29 टी–मान (ज. टंसनम) 2.02 प्राप्त हुआ है जो 0.05 व .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना का सत्यापन

परिकल्पना संख्या–1 के अनुसार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र –छात्राओं की सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति मे सार्थक अन्तर नही है।

तालिका संख्या 1 के अनुसार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा के छात्रों व छात्राओं की अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन क्रम ा: 45.85 व 41.60 एवं 5.12 व 4.36 हैं। टी–मान (ज. टंसनम) 1.68 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता अं ा 98 के .05 व .01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों व छात्राओं के सतत और व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में अन्तर सार्थक नही है। अतः परिकल्पना संख्या 01 केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों व छात्राओं के सतत और व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में अन्तर सार्थक नही है निरस्त नही की जाती है।

परिकल्पना संख्या–2 के अनुसार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र –छात्राओं की सतत् और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्य सहगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

तालिका संख्यां–2 के अनुसार छात्रों व छात्राओं की सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्य सहगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन क्रम ा: 45.39 व 42.60 एवं 5.24 व 4.29 है। टी–मान (ज. टंसनम) 2.91 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता अंश 98 के .05 व .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना ''केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों व छात्राओं के सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्य सहगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति संदर्भ में अन्तर सार्थक नहीं है;' निरस्त की जाती है।

परिकल्पना संख्या –3 'केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र –छात्राओं की सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्यगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति मे सार्थक अन्तर नही है'

तालिका संख्या 3 के अनुसार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों व छात्राओं की सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्य गामी घटक के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन क्रम ा: 46.27 व 44. 31 एवं 5.32 व 4.29 हैं। टी–मान (ज. टंसनम) 2.02 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता अंश 98 के .05 व .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र–छात्राओं की सतत और व्यापक मूल्यांकन के पाठ्यगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है निरस्त की जाती है।

परिणाम–

1. केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की सतत् व व्यापक मूल्यांकन के पाठ्यसहगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।
3. केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के पाठ्यगामी घटक के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

भावी शोध संबंधी सुझाव

1. शिक्षकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता संबंधी शोध किया जा सकता है।
2. माध्यमिक व उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सतत् व व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. राज्य के विभिन्न जिलों के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बड़े न्यादर्श पर सतत् व व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृद्धि का अध्ययन किया जा सकता है।
4. राजस्थान व अन्य राज्यों में सतत् व व्यापक मूल्यांकन का विद्यार्थियों की कार्य क्षमता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन कराया जा सकता है।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

1. शिक्षक विद्यार्थियों की सतत् व व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति विकसित करने हेतु विभिन्न पाठयगामी व पाठय सहगामी गतिविधियों का आयोजन कर सकेंगे।
2. विद्यालय के प्रधानाचार्य सतत् व व्यापक मूल्यांकन को प्रभावी बनाने हेतु आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराकर अभिवृत्ति विकसित करने में सहायता कर सकेगे।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों की सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः इसमें अभी और भी शोध की सम्भावनाएँ है।

सन्दर्भ

- एन.सी.ई.आर.टी. (2009). प्राथमिक कक्षाओं में आंकलन के क्षेत्र में उभरती नयी सोच. भारतीय आधुनिक शिक्षा. 30(2).
- वर्मा, मधुलिका एवं यादव, दीपमाला (2012). कक्षा नवीं स्तर पर मूल्य विवेचना प्रतिमान की प्रभाविकता का सामाजिक मूल्य एवं प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में अध्ययन. भारतीय आधुनिक शिक्षा. 33(1).
- प्रवीन देवगन और रानी यादव (2011) स्नातक स्तर पर सतत् एवं वार्षिक मूल्यांकन पद्धति का प्रभाव. परिप्रेक्ष्य. वर्ष 18, अंक 3, दिसम्बर 2011.
- सिंह, ए. के. (2006). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास.
- कुमार, अनुज (2012). सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन–चुनौतियाँ और संभावनायें. भारतीय आधुनिक शिक्षा. 33(1).

- निशान्त राय एवं सीमा सिंह (2013) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति उत्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृति. परिप्रेक्ष्य. वर्ष 20, अंक 2, अगस्त 2013.
- सिंहल, पूजा (2011). कॉन्टीनिवस एण्ड कॉम्प्रीहेन्सिव इवैल्यूएशन ए स्टडी ऑफ टीचर्स परसेप्शन. Retrived March 14- 2013 from http://conference.nic.edu.
- सी.बी.एस.ई. (2009) टीचर्स मैनूअल ऑन कॉन्टीनिवस एण्ड कॉम्प्रीहेन्सिव इवैल्यूएशन- Retrived March 27- 2013 from http://cbsc.nic.in/cce/ccemanual.

* डॉ. वीना बाना, व्याख्याता, ग्रामोत्थान विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय, संगरिया–335 063

Email: veena.bana@gmail.com Cell: 9414482282

**श्रीमती कुसुमलता, शोध अध्येता, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

Email: vinayak.kumar50@gmail.com Cell: 9414585653